Indian Journal of Anthropological Research
Vol. 4, Nos. 1-2, January-December 2025, pp. 129-136
ISSN: 2583-2417 © ARF India. All Right Reserved
URL: www.arfjournals.com
https://DOI:10.47509/IJAR.2025.v04i1-2.08

Baiga Janjati Mein Nraushadhi, Deshaj Chikitsak Evam Rog Chikitsa Upchar

Umesh Kumar*

Abstract: वर्तमान अध्ययन बैगा जनजति की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के देशज ज्ञान एवं औषधीय प्रकार की जड़ी–बूटीयों पर आध ाारित है। इस जनजति के लोग बड़ी से बड़ी तथा छोटी से छोटी बीमारी का उपचार अपनी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति एवं देशज ज्ञान के आधार पर आस–पास के जंगलों से प्राप्त पेड़–पौधों की जड़ी–बूटीयों एवं छालों के माध्यम से करते हैं। इस समुदाय में सदियों से शरीर संबंधी बीमारीयों एवं विकारों के लिए देवार/ओजा/गुनिया के पास जाकर उपचार कराने की परम्परा रही है। वर्तमान समय में भी बैगा जनजति के लोग अपनी बीमारीयों के उपचार हेतु गुनिया/ओझा/वैद्यराज/देवार के पास जाकर पारंपरिक देशज चिकित्सा पद्धति से इलाज कराते हैं। इस जनजति में प्रायः देखा गया है कि आज भी स्थानीय औषक चिकित्सा पद्ध ति पूर्णतः पारंपरिक देशज ज्ञान पर निभर है। बैगा जनजति के चिकित्सक अपनी चिकित्सा पद्धति में विभिन्न बीमारीयों के उपचार हेतु अलग–अलग पेड़–पौधों की जड़ी–बूटीयों, छाल, फूल, पत्तीयों, कंड, तना एवं बीजों का उपयोग करते हैं। कई बीमारीयों के स्थानीय नाम, वैज्ञानिक नाम, पेड़–पौधों के उपयोगी भाग, औषधि देने की विधि एवं उपचार संबंधी जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया है। इस अनुसधान कार्य में संबंधित बीमारीयों में उपयोग की जाने वाली जड़ी–बूटीयों की चिकित्सीय पद्धति का प्रलेखन करने का प्रयास किया गया है।

Keywords: बैगा जनजाति, देशज चिकित्सक, औषधि, उपचार

Received: 26 October 2025
Revised: 25 November 2025
Accepted: 30 November 2025
Published: 29 December 2025

TO CITE THIS ARTICLE:

Kumar, U. (2025). Baiga Janjati Mein Nraushadhi, Deshaj Chikitsak Evam Rog Chikitsa Upchar, *Indian Journal of Anthropological Research*, 4: 1-2, pp. 129-136.

* संग्रहालय सहायक, इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल, ईमेलः *umeshjhariya89@gmail.com*

Introduction

चिकित्सा मानवविज्ञान के अंतर्गत बीमारी, स्वास्थ्य, सामाजिक–सांस्कतिक, धार्मिक एवं परंपरागत प्रथाओं के बारे में मुख्य रुप से अध्ययन किया जाता है। चिकित्सा मानवविज्ञान के क्षेत्र में 19वीं शताब्दी के बाद से ही बीमारी के क्षेत्र में कई शोध कार्य किए गए हैं। जिसमें से मुख्य रुप से चिकित्सा मानवविज्ञान के क्षेत्र में रोडॉल्फ वरचॉव ने 1848 में चिकित्सा को सामाजिक–सांस्कतिक दृष्टि कोण से देखा था। उनके अनुसार सामाजिक परिस्थितियॉ बीमारी के कारक का काम करती हैं। उन्होंने 1848 में एक पत्रिका निकाली, जिसमें चिकित्सा विज्ञान को पूर्णतः एक सामाजिक विज्ञान माना गया।

इसके पश्चात् मानवविज्ञान में बीमारी के सामाजिक–सांस्कृतिक आयामों के अध्ययन के क्षेत्र में कई शाोध कार्य हुए। इसके बाद 19वीं शताब्दी के छठे दशक (1960) में चिकित्सा मानवविज्ञान की एक अलग शाखा के रुप में आवश्यकता महसूस की गयी। फॉस्टर और एंडरसन (1978) ने 1963 की तीन घटनाओं को निर्धारित किया, जिनकी वजह से चिकित्सा मानवविज्ञान एक विषय के रुप में प्रसिद्ध हुआ।

चिकित्सा मानवशास्त्र के आरंभिक विकास में कुछ विद्वानों का योगदान प्रमुख रहा है, जैसे– डब्ल्यू.एच.आर. रिवर्स (1924–1926), फॉरेस्ट (1932), एकरक्नेक्ट (1942–1945), पॉल (1955), एलैंड (1966) आदि। इसके अलावा भारत में भी चिकित्सा मानव विज्ञान पर कई विद्वानों ने शोध कार्य किए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख विद्वान इस प्रकार हैं– वी. एल्विन (1939), मैरियट (1955), कारस्टेयर्स (1955), कुड (1957)। आरंभ से ही चिकित्सा मानवशास्त्र में पारंपरिक जनजातीय समाज के सदस्यों के बीच चिकित्सा संबंधी मान्यताओं एवं प्रथाओं के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा रही है। वर्तमान समय में भी चिकित्सा मानवविज्ञान विषय का अध्ययन जोर–शोर से किया जा रहा है। चिकित्सा मानवविज्ञान के अंतर्गत जनजातीय समुदायों के विभिन्न पक्षों पर अध्ययन किया जा रहा है।

जनजातीय समुदाय आदिम समय से ही रोगों को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के परंपरागत देशज ज्ञान के आधार पर जंगली पेड़–पौधे की जड़ी–बूटियों एवं छाल का उपयोग करते आ रहे हैं, और वर्तमान समय में भी कर रहे हैं। जनजातीय समुदाय में रोगों से ग्रस्त होने पर परंपरागत जंगली पेड़–पौधे की जड़ी–बूटियों एवं झाड़–फूक के माध्यम से छोटे से छोटे और बड़े से बड़े बीमारी का इलाज ग्राम के देवार/ओझा/गुनिया/चिकित्सक द्वारा किया जाता है।

Baiga Janjati

मध्यप्रदेश में मुख्य रुप से बैगा, भारिया, सहरिया को विशेष पिछड़ी जनजातीय के रुप में सम्मानित किया गया है। जिसमें से बैगा जनजाति एक प्रमुख जनजाति के रुप में मानी

जाती है। अनुसूचित जनजातीयों में कुछ समूह ऐसे हैं जिनमें घटती हुई या स्थिर जनसंख्या, साक्षरता का निम्न स्तर, कृषि पूर्व प्रौद्योगिकी एवं आर्थिक पिछड़ापन पाया जाता है। ये समूह समाज के सबसे कमजोर वर्गों में से हैं। इनकी संख्या कम होने के कारण इनके सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षेणिक, धार्मिक एवं आर्थिक विकास की गति धीमी रहती है। ये अक्सर सुदूर एवं दुर्गम क्षेत्रों में निवास करते हैं। भारत के 17 राज्यों एवं 1 संघ राज्य क्षेत्र में 75 समूहों की पहचान कर उन्हें विशेष पिछड़ी जनजातीय समूह (PVTG) के रुप में श्रेणी बद्ध किया गया है। इन्हीं में से एक बैगा जनजाति भी है।

बैगा जनजाति मध्यप्रदेश की आदिम जनजातीयों में से एक है और वर्तमान में मध्यप्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति समूह है। मध्यप्रदेश के अनूपपुर, डिंडोरी, मंडला, शहडोल, उमरिया एवं बालाघाट जिले में मुख्य रुप से बैगा जनजाति का विवरण मिलता है। इस जनजाति की उप–निजातीयों में नारोतिया, भरोतिया, रायमैना, कंठमैना एवं रेमैना प्रमुख हैं।

इस समुदाय में एकल परिवार की प्रथा पायी जाती है। ये लोग पूरी तरह से जंगल पर निर्भर हैं और आस–पास के जंगलों से खाद्य पदार्थ एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं का संग्रहण करके अपना निर्वाह करते हैं। इस समुदाय में गोदना प्रथा को प्रमुख रुप से माना जाता है। महिला एवं पुरुषों द्वारा गोदना न गोदाने को समाज में निर्धनता का प्रतीक माना जाता है। बैगा महिलायें पूरे शरीर में गोदना गोदवाती हैं। यह मानना है कि गोदना गोदवाने से शरीर में किसी भी प्रकार का चर्म रोग नही होता। यह मान्यता बैगा समुदाय में प्रचलित है।

Addhyan Shetra

यह अनुसंधान कार्य मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ विकास खंड के ग्राम पंचायत हर्राटोला, फर्रीसेमर, भेलवा टोला, दमगढ़, जालेश्वर टोला, बाराती टोला एवं जमुना दादर अमरकंटक गॉव में अनुसंधान कार्य किया गया है। अनूपपुर जिला मध्यप्रदेष के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है, यह जिला मुख्य रुप से पहाड़ी व जनजातीय जिला है। यहॉ के जंगलों में साल के मिश्रित पेड़–पौधों के घने जंगलों के पर्वतों के साथ खूब सूरत मनोरम दृष्य दिखाई देती है। वहॉ के घने जंगलों में जड़ी–बूटियों का भण्डार होता है। यहां के जंगलों में कई तरह के जड़ी – बूटी पायी जाती है जो और कोई जंगल से प्राप्त नही हो सकता है। इस जिले में विशेष रुप से आदिवासी निवास करते है इसलिए इस जिला को आदिवासी जिला घोषित किया गया है। इस वजह से यहां पर निवास करने वाले आदिवासियों का जीवन स्तर ही सरल और सुगम है, उनके घर विशेष रुप से मिटटी, बांस की झाड़ी, धान के पुआल (पैरा) और स्थानीय तौर–तरीकों से बने होते है। यहां पर निवास करने वाले आदिवासी पुरुष विशेष

रुप से इनके वस्त्र–आभूषण–धोती, कुर्ता, पगड़ी इत्यादि पहनते हैं । महिलाएं भी विशेष रुप से लुगरा, साड़ी, पोलका इत्यादि पहनती हैं, यहां के आदिवासी समुदाय की महिलाएं अपने शरीर के अंगो जैसें–हाथ, पैर, छाती, पीठ, जांघ को गोदना से आभूषित करती है।

Addhyan ke Uddeshya

- नृऔषधियों पेड़–पौधों और रोगों का चिकित्सा उपचार का विश्लेषण एवं प्रलेखन करना।
- बैगा जनजाति के चिकित्सकीय रुप में जनजातीय चिकित्सकों की भूमिका विश्लेषण करना।

Pramukh Shabdon ki Kriyasheel Paribhasha

Ethno-Medicinal Plants– इसका तात्पर्य उन पौधों से हैं जिनका प्रयोग विभिन्न रोगों के लिए किया जाता हैं और वे उन आदिवासियों के पारिस्थितिकी में मिलते है, जिनका ज्ञान इनको पीढ़ी गत और अनुभवजनित होता है।

Baiga– यह एक आदिवासी समूह हैं क्योंकि यह सामान्य समाज से दूरस्थ क्षेत्रों में निवासरत और सम्पूर्ण जीवन बहुत सरल होता है। इसके साथ ही साथ उनका रहवास पूर्णतः प्रकृति में ही होता है। इस शोध में जिन बैगा समुदाय को शोध जन समूह के रुप में चुना गया है, उनका संबद्ध केवल मध्यप्रदेश के अनुपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत हर्राटोला से हैं। अन्य किसी पारिस्थितिकी क्षेत्र से नही है।

Saamagri aur Pravidhi&यह अध्ययन अनूपपुर जिले के चयनित आदिवासी क्षेत्रों में आयोजित किया गया है। जहां पर पारंपरिक चिकित्सक बीमारी के उपचार के लिए नृऔषधि जंगली पेड़ पौधें व छाल के जड़ी–बूटियों का देशज ज्ञान के आधार पर पारंपरिक रुप से अभ्यास करते है। उस गॉव का अध्ययन किया गया है। विशोष रुप से बीमार होने पर जंगली पेड़–पौधें व छाल के जड़ी–बूटी का पारंपरिक रुप से इलाज वहॉ के चिकित्सक के द्वारा किया जाता है। कुछ रोगों या बीमारी का इलाज देवी–देवता के आराधना व पूजा पाठ व झाड़–फूंक के माध्यम से भी स्थानीय चिकित्सक के द्वारा किया जाता है। इस अनुसंधान कार्य में मानवविज्ञान के कुछ पारंपरिक शोध प्रविधि व तकनीक का उपयोग किया गया हैंजैसें–ऑब्ज़र्वेशन, इंटरव्यू, केस स्टडी, फोकस ग्रुप डिस्कशन, लाइफ हिस्ट्री तथा पार्टिसिपेंट और नॉन–पार्टिसिपेंट ऑब्ज़र्वेशन के माध्यम से तथ्य संग्रह किया गया है।

Nriaushadhi Prathayen– बैगा जनजाति के जीवन में जंगलो का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। जंगल जहां एक ओर बैगा आदिवासी के लिए आजीविका के स्त्रोत उपलब्ध कराती

है वही दूसरी ओर जीवन रक्षा में भी अहम भूमिका निभाती है। जंगलों से बैगाा आदिवासियों को न केवल वनोपज प्राप्त होता है, बल्कि अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए माध्यम भी उपलब्ध करती है। इसके अलावा बैगा जनजाति के लोग जंगलो से कई तरह के वनऔशधीय पेड़–पौधे, फल–फूल इत्यादि एकत्रित करके उनका उपयोग जीवन रक्षा के लिए करते है। इसीलिए यह माना जाता है कि औशधियों का मूलतः भण्डार जंगल ही होता है। बैगाओं में बीमार होने पर अपने आस पास के अस्पताल जाने की बजाय प्रायः गुनिया, ओझा, अथवा देवार, जो परम्परागत चिकित्सकों के नाम से जाने जाते हैं, उनके पास जाते है। ये वनवासी 'लोक चिकित्सक' बीमार की दशा और बीमारी के लक्षणों के आधार पर चिकित्सा के लिए परम्परागत झाड़–फूंक, तंत्र–मंत्र, पूजा–पाठ, देवी–देवता के ईश्वरी आराधना अथवा अपने पास–पास के जंगली जड़ी – बूटियों का उपयोग करके उन बीमार रोगियों को ठीक करने का प्रयास करते है। प्राचीन चिकित्सा की ये प्रथाएं आदिवासी लोग चिकित्सक को परम्परागत रुप से अपने पूर्वजों से प्राप्त होती है। इस परम्परागत देशज चिकित्सा ज्ञान का हस्तांतरण पीढ़ी दर पीढ़ी बैगा आदिवासीय समुदायों में निरंतर जारी रहता है।

Janjatiya Chikitsak

पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के स्वरुप में बैगा जनजाति लोक चिकित्सक को परंपरागत रुप से पूर्वजों से विरासत या स्वप्न के माध्यम से प्राप्त होते है। परंपरागत चिकित्सा पद्धति की तकनीक में मुख्यतः धार्मिक विश्वास, जादू–टोना/तंत्र–मंत्र, झाड़–फूंक एवं उनके आस–पास के जंगलों से प्राप्त पेड़–पौधों के जड़ी–बूटियों व छालों का ही मुख्य स्थान होता है। कोई भी मानव समाज ऐसा नही है जिसमें धर्म का अस्तित्व किसी न किसी रुप में न रहा हो। मानवशास्त्री आमतौर पर स्वीकार करते है कि धर्म संस्कृति के उन तत्वों में से एक है, जो कि सर्वत्र पाया जाता है। आदिवासी समाज भी इसका अपवाद नही है। जनजातीय धर्मो को लंबे अर्से से जीववाद कहकर वर्णित किया जाता रहा है, अर्थात सृष्टि के प्रत्येक वस्तुओं में जीव का अस्तित्व है। इसलिए आदिम समाज में किसी व्यक्ति विशेष के नाम के स्थान पर प्राकृतिक वस्तुओं को ही धार्मिक विश्वास का आधार माना गया और प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा–पाठ करी जाने लगी जैसें–सूर्य, चंद्रमा, तारे, पेड़–पौधे, नदी–नाले, तालाब, आकस्मिक बिजली आदि । इसके साथ ही कुल देवी देवता के पूजा–पाठ आराधना करने लगे । यही कारण है कि वे परंपरागत चिकित्सा को अपने देवी–देवता के पूजा पाठ आराधना पीढ़ी दर पीढ़ी करते आ रहे है।

Upchaar ke Dauraan Upyog Kiye Jaane Waale Ped-Paudhon, Jadi-Bootiyon avam Chhalon ke Naam

क्र	बीमारी/विकार का नाम	स्थानीय नाम	वैज्ञानिक नाम	उपचार में प्रयुक्त पेड़–पौधे का भाग	दवाई खाने का समय
1	चर्म रोग (Skin Disease)	दहीमन	Condia Macleoii	छाल	सुबह/शाम
2	साइटिका रोग (Exactitude Disease)	हिंग, लहसुन, राई, तेल, झागरहा, चिरचिरा	Ferula assafoetida, Allium sativum Linn, Brassics Aiba, GloriosaSuperba, Linechyrauthes Aspera	जड़ / कांदा	सुबह/शाम
3	पीलिया बुखार (Jaundice Fever)	पतावन मंझीट	Diospyros Montana Rabla Cordifolin	जड़	सुबह/शाम
4	कमर दर्द (Back Pain)	हटिल	Murraya paniculate	जड़	सुबह/शाम
5	पेट दर्द (Abdominal Pain)	दुबी	Cynodon daetylon, pers	जड़	सुबह/शाम
6	बुखार (Fever)	पाडिन टेडिया सुगंधिन	Cissampelos pareira Linn. Artemisia Patlens	जड़ /छाल	सुबह/शाम
7	कमजोरी (Weakness)	जोगी लटटी सफेद मूसली तेजराज भोगराज बलराज कामराज	Asparagus recemosus. Linn Chlorophytum Arundina-ceu Peucedananagpurrense Peucedanam dhanabuch Pangamia pinnata mars	जड़ /छाल	सुबह
8	पीलिया बुखार (Jaundice Fever)	मंझीट, चारमूही	Rabla Condifolia	जड़/छाल	सुबह
9	हड्डी टूटना (Bone Fracture)	हड़जोड़,हड़ संगरी	Cissus quadrangularis. Linn Nyctanthes arbor	बेला	सुबह/शाम
10	पेचिस दस्त (Loose Motion)	पाडिम अमजून	Cissanpelos pareira	जड़	सुबह
11	सिर दर्द (Headache)	कालमी		पत्ती	सुबह

क्र	*बीमारी/विकार का नाम*	*स्थानीय नाम*	*वैज्ञानिक नाम*	*उपचार में प्रयुक्त पेड़–पौधे का भाग*	*दवाई खाने का समय*
12	शरीर सूजन	थूवा	Euphorbia Neriifolia Linn	पत्ती	सुबह
13	मलेरिया बुखार (Malaria Fever)	वन जीर	Vernonle		
14	खुजली घाव (Inching Wound)	नीम	Azadirachta indica	संपूर्ण भाग	सुबह/शाम
15	दमा/खासी (Asthama Cough)	गुलवाकवली	Hedychium	फूल	सुबह
16	पेट दर्द (Abdominal Pain)	फूल चूही	Jasminum Allriculatum	जड़ / छाल	सुबह
17	खूनी दस्त (Haematochezia)	आवला , कुंभ	Phylanthuscmblica, Linn, Careya arborea, Roxb	जड़/छाल	सुबह
18	बार्मी रोग (Barmy Diseases)	किरकिच कमल पौधा	Nelumbo nucifera	जड़	सुबह
19	पाठ बीमारी (Body one Side pain)	घोटोर	Zizyphus Xylopyra, Willd	जड़/छाल	सुबह /शाम
20	झुन बीमारी	कुटज रोहिना कोराय	Holarrhea Antidysenteria. Wall Soymida febrifuga	जड़/छाल	सुबह /शाम
21	फुलनी (Swelling)	कोराय, हाथी लींद	Loxodanta	छाल	सुबह /शाम
22	छाती दर्द (Chest pain)	वन चना		जड़	सुबह /शाम
23	कमर दर्द (Back pain)	अमजुन		जड़	सुबह /शाम
24	आव पेट (Recurrent Dysentery)	बिरंगी बाबुल	Acacia macleodii	जड़/कांदा	सुबह /शाम
25	सर्दी जुखाम (Defluxion)	घोटूर	Zizyphus xylopyra Willd	जड़/छाल	सुबह /शाम
26	बड़े माता बीमारी (Chicken Pox)	कुंभी	Careya arborea	जछाल	सुबह /शाम

Addhyan ka Nishkarsh

बैगा जनजाति वर्तमान में भी पूरी तरह से परंपरागत देशज ज्ञान के जंगली पेड़–पौधो व छाल के जड़ी–बूटियों के व देवी–देवता के पूजा –पाठ ईश्वरी आराधना व झाड़फूंक के ऊपर

पूरी तरह से निर्भर होते है। इस समुदाय में यदि बीमार पड़ते है तो सबसे पहले अपने गॉव के चिकित्सक, देवार/ओझा/गुनिया के पास जाकर उनसे ही रोगों का इलाज कराते हैं । ये लोग उस इलाज से पूरी तरह से ठीक भी हो जाते है। इस समुदाय का विश्वास है कि हमारी बीमारी को हमारे गॉव के चिकित्सक, देवार/ओझा/गुनिया ही ठीक कर सकता है। चिकित्सक सबसे पहले उनके बीमारी का कारण, बीमारी की पहचान करने का प्रयास करते है। उसके बाद ही बीमारी के अनुसार फिर रोगी को जंगली पेड़ पौधों के जड़ी–बूटी एवं झाड़ फूंक किया जाता है या इस विधि से भी ठीक नही होने की स्थिति में फिर देवी–देवता के पूजा–पाठ ईश्वरी आराधना करके बीमारी को ठीक की जाती है। बैगा लोग बहुत से बीमारी के कारण अपने घर के देवी–देवता या गॉव के देवी–देवता के रुठना या जादू टोना का कारण मानते है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि बैगा जनजाति में जो बीमारी का कारण है वह अत्यधिक महुआ फूल के दारु पीना, अपने घरों के आस पास की साफ–सफाई एवं उत्तम पेयजल की व्यवस्था नही होना और अपर्याप्त पोषण की कमी होने के कारण अत्यधिक बैगा जनजाति के लोग बीमार पड़तें हैं। वर्तमान में भी बड़े से बड़े बीमारियों के लिए हास्पिटल नही जाते है। बैगा चिकित्सकों के द्वारा उपयोग की जाने वाली जंगली पेड़–पौधे को मध्यप्रदेश को संज्ञान में लाना चाहिए एवं उन औषधि पेड़–पौधे को सरकार द्वारा संरक्षण करने की अति आवश्यकता है नही तो कुछ समय पश्चात उन औषधि पेड़–पौधे विलुप्त होने की कगार पर है। इस वजह से उन पेड़–पौधों का संरक्षण करना अतिआवश्यक है।

Sandarbh Soochi

Jadhav, D. (2008). *Medicinal plants of Madhya Pradesh & Chhattisgarh*. Daya Publishing House.

Jora Lemon, D. (2017). *Exploring medical anthropology*. Routledge.

Nirguney, B. (2018). *Disappearing tribal tattooing traditions*. Indira Gandhi National Museum of Man & Aagam Kala Prakashan.

You, F. (1932). *The family*. Oxford University Press.

Verma, B. (2014). *Ayurveda: The science of medicinal plants*. Yug Nirman Yojana Vistar Trust.